

जब तुम पाठशाला आए थे, तब क्या ये भीत ऐसी ही थी?" "नहीं।" 10 सुखिया ने पलटकर भीत को देखा जिस पर सफ़ेदी पुती थी, जिसने दिवारों और गिरे हुए लेवड़ो को ढक दिया था और उस पर मध्यम, मध्य में नीले रंग का अशोक चक्र बना था व नीचे बड़े बड़े सुंदर अक्षरों से महापुरुषों के कथन अंकित थे। सुखिया उस कथन को तो पढ़ नहीं पाया किंतु भीत को देखकर उसे अच्छा लगा।

"अब ये दीवार अच्छी दिख रही है न?"

"हां, गुरु जी।"

"देखो। चार अक्षर लिखने के बाद ये भीत भी बोलती हुई नजर आ रही है। इसकी दरारें, इसकी जर्जरता सब इन अक्षरों के नीचे दब गई है न?"

"हां, गुरु जी।"

"बस यही बदलाव लाएगी। तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई जिसने दीवार को जीवंत कर दिया वह एक दिन रीतियों, कुरीतियों, जाति, वर्ग और सामाजिक व्यवस्था की सभी दरारों को ढक देती। नीला रंग क्रांति का, धोला रंग शांति का। ये दोनों ही शिक्षा से संभव हो सकेंगे। समय के साथ बदलाव जरूर होंगे सुखिया, जरूर होंगे।" ¹¹

कहानी सफ़ेद और नीले रंग के व्यापक अर्थ को दृष्टिगत कराती है। बालमन को आंदोलित कर मुक्ति की आस, सपने जगा रही है। समस्या और समाधान दोनों ही कहानी में हैं। कहानी में तर्कसम्मत विवेचन, कहानीकार की विचारक, चिंतक छवि का बोध भी कहानी कराती है।

प्रगतिशील कहानी है, जो स्वस्थ मानसिकता वाले समाज की परिकल्पना लिए है। संवादों की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है। कहानी पूर्णतः अधिकार चेतना, सामाजिक चेतना व समानता की बात करती है व गैर दलित जाति के इंसान के दलित समाज के सहयोग को स्थापित करती कथा है। कहानी संवाद, शैली वैविध्य, मौलिकता व आत्मीय स्वर लिए है। कहानी संवादों से आरंभ होकर भविष्य के उज्ज्वल सपने और नई सुबह जो नया प्रकाश फैलाएगी; पर अंत की गई है। कथावस्तु, गठन, वाक्य संरचना, व्यंग्य विनोद व सपाटबयानी कहानी की गुणवत्ता है। इसके लिए कहानीकार श्लाघ्य योग्य हैं।

संदर्भ :-

1. हिन्दी कहानी एक नई दृष्टि - इंद्र मदान - पृष्ठ -35
2. समकालीन भारतीय साहित्य - पत्रिका मार्च, अप्रैल अंक -2021
3. हथौड़ा - 135
4. चमरवा रतनकुमार सांभरिया की प्रतिनिधि कहानियां, डॉ. लोकाेश गुप्ता पृष्ठ - 44
- 5 - खेत और अन्य कहानियां संग्रह - रतनकुमार सांभरिया - पेज - 90
6. एक कप चाय और तुम (कहानी संग्रह)- सुनील पंवार -73
7. एक कप चाय और तुम द्वितीय संस्करण - सुनील पंवार - 73
8. एक कप चाय और तुम - " - सुनील पंवार -74
9. एक कप चाय और तुम - " -सुनील पंवार - वही
10. एक कप चाय और तुम - (कहानी संग्रह) सुनील पंवार - 75

मैं द्रौपदी नहीं हूँ : नारी के अंतःकरण की वेदना

डॉ प्रवीन कुमार

सहायक प्रोफेसर (हिंदी)

राजकीय महाविद्यालय सिधरावली, मो.9811401368

'मैं द्रौपदी नहीं हूँ' डॉ. ज्ञानी देवी जी का प्रथम कहानी-संग्रह है। इस कहानी-संग्रह में हमें ज्ञात होता है कि नारी की जीवनशैली में आज भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। उसे आज भी पूर्वकालों की तरह दासी ही समझा जाता है। वैदिककाल में नारी की स्थिति उत्तम थी, परंतु जैसे-जैसे दास वर्ग का जन्म हुआ है, स्त्रियों की पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति में पतन आरंभ होता गया है। सेवा ही नारी का मुख्य कार्य बन गया, यद्यपि घर का सारा काम एवं व्यवस्था अभी भी स्त्री के हाथों में है, परंतु अपने मूल अधिकारों से वह अभी तक वंचित है।

सामंती समाज में स्त्री को तीन नाम दिए गए थे-पत्नी, रखैल, वेश्या। इसके अलावा वह किसी चौथे संबंध को स्वीकार नहीं करता है यथा-

...जब औरत को वह संरक्षण यानी रोटी, कपड़ा और मकान देने के साथ अपना नाम देकर सामाजिक स्वीकृति देता है तो वह उसे पत्नी कहता है लेकिन जब संरक्षण देकर अपना नाम नहीं देता तो वह रखैल है।"

शेक्सपियर जैसे महान विद्वान ने कहा है-'नाम में क्या रखा है? लेकिन क्या आपने कभी किसी को अपनी बेटी या पोती का नाम द्रौपदी रखते हुए सुना है? सौता, रमा, लक्ष्मी, दुर्गा यहाँ तक की काली नाम की लड़की आपको मिलेगी, लेकिन द्रौपदी नहीं मिलेगी। शायद इसीलिए लेखिका ने अपने काव्य-संग्रह का नाम 'मैं द्रौपदी नहीं हूँ' रखा है। कहानी संग्रह का शीर्षक ही इतना जिज्ञासावर्द्धक है कि पाठक अनायास ही इस कहानी संग्रह को पढ़ने के लिए खिंचा चला आता है। इस कहानी संग्रह के माध्यम से लेखिका उन सभी रूढ़िवादी परंपराओं को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए प्रयासरत है, जिन्होंने नारी-जीवन के विकास को अवरुद्ध किया है।

'मैं द्रौपदी नहीं हूँ' कहानी एक पहाड़ी लड़की की पीड़ा और विवशता को व्यक्त करती है, जिसका विवाह हरियाणा प्रदेश के कुरुक्षेत्र जनपद के एक अंधेड़ व्यक्ति के साथ कर दिया जाता है। श्रेष्ठा नाम की यह सुंदर लड़की अपनी पीड़ा को एक चित्रकार के समक्ष व्यक्त करते हुए कहती है कि मैंने अपनी नियति समझकर अंधेड़ उग्र के पति को स्वीकार कर लिया था, परंतु दूसरी रात मेरे कमरे में मेरे पति की जगह कोई दूसरा व्यक्ति आता है। मैं उसका विरोध करती हूँ तो वह कहता है-'... वह तुम्हारा पति किस-किस को जान से मारेगा। कल तुम्हारे पास तीसरा आएगा, परसो चौथा व नरसो पाँचवाँ...। वह अकेले थोड़े ही तुम्हारा पति है? फिर, हमें बाहर निकालने वाला यह कौन है? हम पाँचों ने तुम्हें मिलकर खरीदा है।...यह कुरुक्षेत्र की भूमि है, यहाँ द्रौपदी जैसी राजकुमारी के भी पाँच-पाँच पति थे, फिर तुम्हारी तो औकात क्या है?' ²

इस तरह अगली प्रातः श्रेष्ठा वहाँ से भाग आती है। वह चित्रकार को आपबीती सुनाते हुए कहती है कि-- बाबूजी, आप ही बताइए, क्या द्रौपदी बार-बार जन्म लेती रहेगी? नहीं ना? मैंने उन्हें छोड़कर क्या बुरा किया बाबूजी? मैं द्रौपदी नहीं बनना चाहती थी।' ³

'काशी' नामक कहानी में भ्रूण हत्या की समस्या के द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि नारी पर अत्याचार उसके जन्म लेने से पहले ही

प्रारंभ कर दिए जाते हैं, किस तरह उसे इस दुनिया में आने से पहले ही मार दिया जाता है, क्योंकि वह एक कन्या शिशु है। वह नहीं बालिका अपने भय व पीड़ा को इन शब्दों में व्यक्त करते हुए कहती है कि-

'... मेरा दिल धड़क रहा था, दहल रहा था, रूह काँप रही थी। मेरे रोम-रोम से बचाओ-बचाओ की पुकार निकल रही थी। लेकिन सुननेवाला कोई नहीं था। अब तक माता-कुमाता नहीं सुनी थी, पर आज उसों के गर्भ में पड़ी हूँ। लाख सिर पटका, हाथ-पैर चलाए, लेकिन कोई सुनवाई नहीं। शायद वह यह सोचकर कोई प्रतिक्रिया नहीं कर रही थी कि कुछ ही देर में उन्हें मृगसे मुक्ति मिल जाएगी।'⁴

यहाँ नहीं बालिका एक प्रश्न छोड़ जाती है क्यों प्रताड़ित नारी ही हर बार?

नारी की विवशता यहीं पर खत्म नहीं होती। उसे कदम-कदम पर पीड़ा को भोगना है, क्योंकि वह नारी है। उसे अपने परिवार की झूठी आन-बान-शान को भी बनाए रखना है, क्योंकि वह नारी है। 'रेत का घरोँदा' कहानी में निशा नाम की लड़की एक भिन्न जाति के लड़के के साथ भाग प्रेम-विवाह कर लेती है। कुछ दिन बाद उसके घरवाले उसे पकड़कर वापिस घर ले आते हैं। वह अपने पिता व भाई से निवेदन करती है कि उसे छोड़ दिया जाए, वह आगे से कोई गलती नहीं करेगी। परंतु जब वे उसे माफ नहीं करते तो वह अपने पिता से कहती है-

.... तो फिर लाओ सल्फास की गोली पिताजी! उसने स्थिरता से कहा था। उसके पिता ने उसे पानी का गिलास थमाया और सल्फास को गोली उसकी हथेली पर रख दी।⁵ यहाँ लेखिका समाज के ठेकेदार पुरुषों से पुनः यह प्रश्न पूछती है कि वह इतना निर्दयी कैसे हो सकता है? क्या गलती की कोई माफी नहीं है? क्या वह कभी भी गलती नहीं करता? यदि हाँ तो क्या उसकी भी वही परिणति होगी?

'पद चिह्नों की मिट्टी' कहानी में बाल-विवाह समस्या के द्वारा लेखिका यह प्रश्न उठाती है कि एक ऐसा विवाह जिसके मायने भी वर-वधू को पता नहीं, क्या उसके होने से किसी बालिका की जिंदगी नष्ट करना उचित है?

इस कहानी में एक नहीं बालिका का विवाह बचपन में हो जाता है, परंतु बचपन में हो उसके अनदेखे पति की मृत्यु हो गई। अब उस बालिका पर दुहाजू का लेवल लग गया, इसीलिए उसकी शादी भी एक उधेड़ उम्र के दुहाजू से कर दी जाती है। उसे यह तो पता है कि उसका पति दुहाजू है, परंतु यह जानकर कि वह दो बच्चियों का पिता है, वह ठगी-सी रह जाती है।

'... वह पलंग पर लगभग तीन व पाँच वर्ष की बच्चियों को लिटाते हुए ये कहते हैं-लो, अपनी माँ के पास जाओ, फिर मृगसे कहते हैं-मैंने इन्हीं के लिए तुमसे शादी की है। इन्हें संभालने के लिए कोई औरत तो घर में चाहिए ही थी, इसलिए पुनः विवाह करना पड़ा।'⁶

यहाँ लेखिका नारी का पक्ष लेकर यह प्रश्न पूछती है कि क्या नारी का महत्त्व इतना ही है कि वह बच्चों को पाले? क्यों उसकी कोई अपनी अभिलाषा एवं महत्त्वाकांक्षा नहीं है? ऐसे ही अनुत्तरित प्रश्न नारी वेदना को और बढ़ा देते हैं।

'कुंभीपाक' कहानी जिसका अर्थ है नरका भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति पर बह कालिख पोतती है; जिसको सुनकर दिल दहल जाता है। इस कहानी में कालिया की पत्नी प्रसव पीड़ा के कारण मृत्यु का ग्रास बन जाती है। घर का सारा बोझ कालिया की 10 वर्षीय बेटी निशा पर आ जाता है। वह कदम-कदम पर अपनी माँ की कमी महसूस करती है, उसका पिता धीरे-धीरे और भी आलसी हो जाता है। वह खेतों में निशा का हाथ बँटवाने के लिए एक नौकर रख देता है, लेकिन पाप अपनी चरमसीमा पर तब पहुँच जाता है, जब एक रात कालिया अपनी बेटी

निशा को अपनी हवस का शिकार बना लेता है। निशा इसे स्वप्न समझकर भ्रमित थी, परंतु धीरे-धीरे गर्भ बढ़ने से इसे बीमारी समझ अपने पिता से पूछती है कि यह क्या है पिताजी? तो वह कहता है कि-

.... खबरदार! किसी के आगे जुबान भी खोली तो! मेरा नाम भी तेरी जुबान पर आया तो गर्दन काट देगा! वैसे भी गाँव वाले सब यही जानते हैं कि तू... नौकर के साथ ... मुँह काला ... करती... है।'⁷

अब निशा को पता चल गया था कि मेरे साथ में हुआ कुकर्म कोई सपना नहीं बल्कि कड़वा सच था। इसलिए वह अपनी इज्जत की रक्षा के लिए यह कदम उठाती है-

'... उसने दराती उठाई और एक साथ कई बार धड़ाधड़ करते हुए उस राक्षस की गर्दन अलग कर दी... उसने फिर अपनी जान भी तेल छिड़कर दे दी।'⁸

लेखिका पुनः यह प्रश्न उठाती है कि आखिर कब तक नारी झूठी इज्जत को बचाने के लिए पुरुषों पर कुर्बान होती रहेगी? वह किस पर विश्वास करे? क्योंकि उसका रक्षक ही उसका भक्षक बन जाता है। ऐसी कौन-सी जगह है, जहाँ पर स्त्री सुरक्षित है?'साधना' एक ऐसी लड़की की कहानी है, जो सुशील, सुंदर एवं चरित्रवान है। उसके रूप लावण्य से कॉलेज की सभी प्राध्यापिकाएँ मुग्ध एवं आकर्षित हैं। साधना बहुत ही होशियार है, परंतु अब उसके घरवाले उसकी शादी ऐसे युवक से करना चाहते हैं, जो कम पढ़ा-लिखा है। किंतु साधना अभी पढ़ना चाहती है, इसलिए वह अपनी मैडम से कहती है कि वह उसकी मदद करें-

'मैडम! मैंने पढ़ने के अतिरिक्त कोई गुनाह नहीं किया। मैं अपने-आपको सभी तरह की परीक्षाओं में डालकर गला रही हूँ। मृगसे क्यों नहीं आगे पढ़ने दिया जाता? लड़के अगर मेरे बराबर पढ़े-लिखें नहीं है... मैडम तो इसमें मेरा क्या दोष है?'⁹

अब हमारे समक्ष यह समस्या आती है कि योग्यता होने पर भी नारी को आगे क्यों नहीं बढ़ने दिया जाता? क्यों पग-पग पर उसकी अनावश्यक अग्नि-परीक्षा ली जाती है?

'साधना' ऐसी योग्य लड़की है कि उसको कोई भी लड़का अपनी पत्नी बनाकर गौरवान्वित महसूस करेगा। लेकिन वह अनपढ़ लड़का उसके चरित्र की पड़ताल बस के कंडक्टर से करता है तो वह अपनी मैडम से कहती है- ... आवारा, असभ्य, गँवार से गँवार लड़का भी लड़की को वस्तु क्यों समझता है मैडम? उन्हें यह हक किसने दिया कि किसी शरीफ लड़की को यूँ जलील करें? मैं सब कुछ बर्दाश्त कर सकती हूँ, अपने परित्र की तफसीस नहीं।¹⁰ 'तलाश' कहानी एक 50 वर्षीय सुदर्शना नामक स्त्री की कहानी है, जिसका पति मर जाता है। वह अपनी जिम्मेदारी निभाकर अपनी दोनों पुत्रियों का विवाह कर देती है। बड़ा पुत्र गुलत संगत के कारण जेल में है, छोटे पुत्र को लकवा मार जाता है, इसलिए वह घर छोड़कर चला जाता है। सुदर्शना अपने पुत्र की तलाश में शहर और अपनी ससुराल के ही हमउम्र पुलिसवालों के यहाँ रूक जाती है। एक दिन पुलिसवाला सुदर्शना के सामने विवाह-प्रस्ताव रखता है, तो वह लज्जा अनुभव कर उसका घर छोड़ किसी आश्रम में चली जाती है। वह पुलिसवाला गाँव के पंच, सरपंचों के साथ जाकर सहर्ष उससे विवाह कर लेता है। धीरे-धीरे पुलिस वाले की पौत्र-वधू का उसके घर पर नियंत्रण हो जाता है, वह पुलिसवाला एक दिन सुदर्शना से कहता है-

.... इनके कामों में क्यों हरदम दखल करती हो? तुम चुप नहीं रह सकती क्या? चुपचाप जैसा देते हैं, खा लिया करो। पसंद नहीं है तो तुम्हारी मर्जी, यहाँ रह या कहीं और तेरी वजह से मैं अपना बुढ़ापा कैसे बिगाड़ लूँ?¹¹

लेखिका यहाँ पुनः यह प्रश्न करती है कि कब तक सुदर्शना जैसी असहाय स्त्री को अपनाकर स्वार्थ पूर्ति होने पर त्यागा जाता रहेगा? कब तक साधना जैसी लड़की की योग्यता को तिलांजली दी जाएगी? कब तक निशा जैसी लड़की अपने रक्षक द्वारा नोची जाती रहेगी कब तक बाल-विवाह के नाम पर नारी के जीवन को नरक बनाया जाएगा? कब तक प्रेम-विवाह के नाम पर स्त्री की बलि ली जाएगी? कथ तक स्त्री द्रौपदी बनकर रहेगी? इस प्रकार लेखिका ने इन सभी समस्याओं का निदान एवं नारी की अंतर्वेदना को कहानी-संग्रह में प्रकालतापूर्वक चित्रित किया है। अतः डॉ० ज्ञानी देवी ने अपने विचारों से निश्चित ही पाठक वर्ग को प्रभावित किया है, आशा है कि प्रत्येक सजग पाठया इन सभी समस्याओं को खडित करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देगा।

सन्दर्भ

1. अरविंद जैन, औरत होने की सजा, पृ. 17
2. डॉ. ज्ञानीदेवी, मैं द्रौपदी नहीं हूँ, पृ. 20
3. डॉ. ज्ञानीदेवी, मैं द्रौपदी नहीं हूँ, पृ. 21
4. डॉ. ज्ञानीदेवी, वही, पृ. 34
5. डॉ. ज्ञानीदेवी, वही, पृ. 47
6. डॉ. ज्ञानीदेवी, वही, पृ. 107
7. डॉ. ज्ञानीदेवी, वही, पृ. 136
8. डॉ. ज्ञानीदेवी, वही, पृष्ठ 136
9. डॉ. ज्ञानीदेवी, वही, पृष्ठ 166
10. डॉ. ज्ञानी देवी, वही पृष्ठ 167
11. डॉ. ज्ञानीदेवी, वही, पृष्ठ 121

भारत राष्ट्र की अर्थव्यवस्था पर युद्ध से होने वाले नुकसान

डॉ. एन.पी.प्रजापति

सहायक प्राध्यापक हिंदी
शासकीय महाविद्यालय बाण सागर, जिला -शहडोल

युद्ध एक ऐसी घटना है जो किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था पर विनाशकारी प्रभाव डाल सकती है। युद्ध के दौरान, उत्पादन और व्यापार बाधित होता है, जिससे आर्थिक विकास धीमा या रुक जाता है। इसके अलावा, युद्ध से मानव जीवन और संपत्ति का नुकसान होता है, जिससे आर्थिक लागत बढ़ जाती है। भारत एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था है जो युद्ध के लिए कमजोर है। भारत की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि, सेवाओं और विनिर्माण पर आधारित है। युद्ध से इन क्षेत्रों में गंभीर नुकसान हो सकता है।

कृषि पर प्रभाव:-

युद्ध से कृषि पर व्यापक प्रभाव पड़ सकता है। युद्ध के दौरान, किसानों को अपने खेतों में काम करने में कठिनाई हो सकती है। इसके अलावा, युद्ध से खाद्य आपूर्ति बाधित हो सकती है, जिससे खाद्य कीमतों में वृद्धि हो सकती है।

सेवाओं पर प्रभाव:-

युद्ध से सेवाओं पर भी गंभीर प्रभाव पड़ सकता है। युद्ध के दौरान, व्यवसायों को बंद करना पड़ सकता है या उन्हें कम क्षमता पर संचालित करना पड़ सकता है। इससे रोजगार में कमी आ सकती है और आर्थिक विकास धीमा हो सकता है।

विनिर्माण पर प्रभाव:-

युद्ध से विनिर्माण पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। युद्ध के दौरान, आपूर्ति श्रृंखला बाधित हो सकती है, जिससे उत्पादन में कमी आ सकती है। इसके अलावा, युद्ध से विनिर्माण संयंत्रों को नुकसान पहुंच सकता है, जिससे उत्पादन और रोजगार में और भी अधिक कमी आ सकती है।

मानव जीवन और संपत्ति पर प्रभाव:-

युद्ध से मानव जीवन और संपत्ति का भी विनाश होता है। युद्ध के दौरान, लोगों को मारा जा सकता है, घायल हो सकता है या विस्थापित हो सकता है। इसके अलावा, युद्ध से भवन, बुनियादी ढांचा और अन्य संपत्ति को नुकसान पहुंच सकता है। इससे आर्थिक लागत बढ़ जाती है और आर्थिक विकास में बाधा आती है।

भारत की अर्थव्यवस्था पर युद्ध के प्रभाव के कुछ विशिष्ट उदाहरण:-

- 1962 में भारत-चीन युद्ध के दौरान, भारत की अर्थव्यवस्था में 3.5% की गिरावट आई।
- 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान, भारत की अर्थव्यवस्था में 2.5% की गिरावट आई।
- 2008 में वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान, भारत की अर्थव्यवस्था में 6.6% की गिरावट आई।

इन उदाहरणों से पता चलता है कि युद्ध भारत की अर्थव्यवस्था के लिए एक गंभीर खतरा है। युद्ध से आर्थिक विकास में भारी कमी आ सकती है और गरीबी और बेरोजगारी में वृद्धि हो सकती है।

महिलाओं और बच्चों पर पड़ने वाला प्रभाव:-

युद्ध का महिलाओं और बच्चों पर सबसे अधिक विनाशकारी प्रभाव पड़ता है। युद्ध के कारण महिलाओं और बच्चों को निम्नलिखित नुकसान होते हैं: